ई-समाचार

द्विमासिक समाचार पत्रिका

अंक - 10 मार्च- अप्रैल वर्ष - 2016

ई-कक्षा का उद्घाटन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के स्थाई परिसर अरगुल के प्रयोगशाला परिसर में दिनांक 05 मार्च 2016 को संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने ई-अध्ययन कक्ष (ई-क्लासरुम) का उद्घाटन किया। वर्तमान में ई-अध्ययन कक्ष 92 लैपटॉप्स से सुसज्जित है जो शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित सभी एनपीटीईएल व्याख्यनों का प्रसारण करेगा। इसके अलावा ई-अध्ययन कक्ष सामान्य कंप्यूटिंग सुविधा की सेवा भी प्रदान करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2016

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 08.03.2016 को संस्थान के सामंतपुरी परिसर के संस्थान प्रेक्षागृह में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महिला शिकायत निवारण समिति द्वारा किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री किरण मानरल, प्रतिष्ठित लेखिका एवं समाज सेविका तथा प्रो.पी. यशोधरा, सम्मानीय निदेशक राष्ट्रीय समाज कार्य एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान (एनआईएसडब्ल्यूएएसएस), भुवनेश्वर उपस्थित थी। उद्घाटन समारोह में संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राजकुमार एवं प्रो. वी.आर. पेदिरेड्डी, संकायाध्यक्ष, सतत शिक्षा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी राज कुमार ने किया, तदोपरांत सुश्री मानरला के साथ भी साक्षात्कार एवं प्रो. यशोधरा की प्रेरणास्पद व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों एवं छात्रों के साथ " प्रोहिबिशन ऑफ एंट्री ऑफ वूमेन ऑफ सर्टेन एजेस इन प्लेसेस ऑफ वर्शिप" विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान आयोजित कविता, कहानी लेखन, लोगो डिजाइनिंग एवं फोटोग्राफी पर प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागीगण

कविता लेखन: शंकर लाल बैरवा - **प्रथम** (एम.एससी, एसबीएस) किरणदीप कौर – **द्वितीय** (एम.एससी, एसबीएस)	**लघु कहानी लेखन**: अपरमिता चंद – **प्रथम** (शोधार्थी, एसबीएस) सयानी भट्टाचार्य – **द्वितीय** (एम.एससी, एसबीएस)
लोगो पैंटिंग: संगीता – **प्रथम** (एम.एससी, एसबीएस (गणित) स्मिता चक्रवर्ती – **द्वितीय** (एम.एससी, एसबीएस)	**फोटोग्राफी**: संगीता - **प्रथम** (एम.एससी, एसबीएस) " बंचन किरो संगमा – **द्वितीय** (बी.टेक, एसईएस)

कार्यक्रम का समापन डॉ. एस. बाहिनीपति, अध्यक्षा, महिला शिकायत निवारण समिति के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संपादकीय.....

ई-समाचार का 10 वाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता का आभास हो रहा है। इस अंक में हमने मार्च-अप्रैल के दौरान संस्थान में आयोजित गतिविधियों से संबंधित खबरों को प्रकाशित किया है। इस अंक में हमने संस्थान में आयोजित होली उत्सव की खबर को भी प्रकाशित किया है। होली फाल्गुन माह में मनाया जाने वाला भारतीयों का प्रमुख त्यौहार है। होली के दिन वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद अक्षुण्ण रहता है। होली का पर्व आपसी वैमनस्यता को खत्म करता है और आपसी भाईचारें की भावना स्थापित करता है।

इस अंक में संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों को प्रकाशित किया गया है जिसमें संस्थान में अखिल भा.प्रौ.सं. के नियोजन अध्यक्षों की बैठक के साथ-साथ संस्थान की राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता से संबंधित खबर प्रकाशित की गई है।

इस अंक में संस्थान में आयोजित सांस्कृतिक सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों को भी प्रकाशित किया गया है। हम सदैव से अपनी संस्कृति के ही बल पर विश्व में अपना परचम लहराते आए है। हमारी संस्कृति हमारे जीवन का संवाहिकता है। जिसके आधार पर हम अपनी पहचान बनाते है।

संस्थान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। इस अंक में हमने नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट को लोकार्पण, एक दिवसीय कार्यशाला एवं प्रतियोगिता के आयोजन से संबंधित खबरों को भी प्रकाशित किया है।

इस अंक में प्रसद्धि साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" जी की 105 वीं जन्मदिवस पर उनके काव्य संग्रह "हरी घास पर" की एक प्रसिद्ध कविता "नदी के द्वीप" प्रकाशित की गई है।

- नितिन जैन

होली उत्सव

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने पहली बार अपने नवनिर्मित स्थाई परिसर में होली उत्सव का आयोजन पूरे उत्साह एवं आनंद के साथ 24 मार्च 2016 को किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी संकाय, स्टाफ सदस्यों के साथ उपस्थित सभी छात्रों को होली की बधाई दी। इस उत्सव में महानदी छात्रावास एवं सुबर्णरेखा छात्रावास के छात्र -छात्राओं ने भाग लिया।

प्रतिबिंब एवं वीडियो प्रसंस्करण पर एक दिवसीय कार्यशाला

विद्युत विज्ञान विद्यापीठ के संकाय सदस्यों ने दिनांक 02 अप्रैल 2016 को संस्थान के अरगुल परिसर के प्रथम वर्षीय प्रयोगशाला परिसर में मैटलैब एवं सिमुलिंक के प्रयोग के माध्यम से रास्पबैरी पीआई पर प्रतिबिंब एवं वीडियों संस्करण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 80 छात्रों ने भाग लिया।

कार्यालयीन कार्य में राजभाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण

राजभाषा एकक द्वारा 17-18 मार्च 2016 के दौरान संस्थान के कर्मचारियों के लिए **"कार्यालयीन कार्य में राजभाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण"** विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. डी. गुणसेकरण, कुलसचिव ने की।

कार्यशाला का प्रारंभ करते हुए श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने उपस्थित प्रशिक्षुओं का स्वागत किया और कार्यशाला के आयोजन के साथ ही राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला और कहा कि सरकारी कार्यालयीन काम-काज राजभाषा में करना हम सभी का दायित्व है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमने दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया है जिसमें कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा ने सभी प्रशिक्षुओं से अपने संबोधन में कहा कि हमारा यह संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करें। केंद्र सरकार का कार्यालय होने के कारण हमें भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना अनिवार्य होता है। इस संबंध में मंत्रालय से निरंतर पत्र प्राप्त होते है। इस कार्यशाला में न सिर्फ आपको सरल एवं सुगम हिंदी के प्रयोग की जानकारी दी जाएगी बल्कि आप सभी को हिंदी में काम करने के व्यावहारिक गुर भी सिखाए जाएंगे।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे संस्थान कुलसचिव डॉ. डी. गुणसेकरण ने उपस्थित प्रशिक्षुओं को उनके दायित्वों के निर्वहन हेतु अपील की और राजभाषा के प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमारा संस्थान अभी नया है और हम अपनी अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त राजभाषा का अनुपालन करने के लिए प्रतिबद्ध है। हम छोटे-छोटे प्रयोग के माध्यम से अपना दैनिक कार्य हिंदी में कर सकते है और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते है। आपकी सहायता के लिए राजभाषा एकक हमेशा तत्पर है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि किसी भी काम को करने के लिए इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। अगर इच्छाशक्ति हो तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में राजभाषा नीतियों के अनुपालन के लिए सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया और प्रति दिन कम से कम एक हिंदी का पत्र तैयार करने तथा धारा 3(3) के अंतर्गत सभी दस्तावेज़ों को द्विभाषी रूप में प्रकाशित करने हेतु अपील की।

कार्यशाला के दौरान श्री जैन ने उपस्थित प्रशिक्षुओं को राजभाषा नीति, हिंदी टंकण एक परिचय, हिंदी में कार्य करने के लिए उपयोगी वेबसाइट की सहायता, कर्मचारियों की भूमिका, कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में कुल 15 कर्मचारियों ने भाग लिया।

भा.प्रौ.संस्थानों में उद्योगों द्वारा वर्तमान भर्ती पर कार्यशाला

संस्थान की भविष्य विकास प्रकोष्ठ (सीडीसी) ने दिनांक 01.04.2016 को भा.प्रौ.संस्थानों में उद्योगों द्वारा वर्तमान भर्ती पर कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में शहर के तथा आस-पास के संस्थानों/ विश्वविद्यालयों के निदेशक, कुलपति सहित अखिल भा.प्रौ.संस्थानों के नियोजन प्रकोष्ठ के अध्यक्ष उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने देश के विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार मानव संसाधन से संबंधित मुद्दों पर प्रकाश डाला और उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप उच्च शिक्षा योजना के सुधार पर बल दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हमें उद्योगों एवं संस्थागत अध्यक्षों के विचारों से अनुसार देश की मानव संसाधन की आवश्यकता को उचित मूल्यांकन करना चाहिए।

विभिन्न भा.प्रौ.संस्थानों जैसे कानपुर, दिल्ली, खड़गपुर, रुड़की, गुवाहटी, भुवनेश्वर, रोपड़, जोधपुर आदि के नियोजन अध्यक्षों ने अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त, डॉ. सी.एन.भेंडे, प्राध्यापक प्रभारी, सीडीसी, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने भा.प्रौ.सं. मद्रास एवं बॉम्बे की ओर से प्रस्तुति दी। नियोजन प्रकोष्ठ के अध्यक्षों ने गत तीन वर्षों के सांख्यिकीय आकड़ों के साथ उद्योगों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे आईटी, सलाहकार, शिक्षा आदि में नियोजन की प्रवृत्तियों पर प्रस्तुति प्रस्तुत की। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने भा.प्रौ.संस्थानों में प्रभावित वर्तमान प्रवृत्तियों के विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया। प्रो.डी.डी.मिश्र, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल, आईएम धनबाद ने चर्चा के दौरान अवर स्नातक छात्रों के प्रमुख क्षेत्रों में नियोजन के सुधार के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्रदान करने की आवश्यकताओं पर बल दिया।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1.डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 29.02.2016 से 02.03.2016 तक "इलेक्ट्रोकैमिकल एंड ऑप्टिकल इमेजिंग डिवाइस" विषय पर डीएसटी के पूर्व प्रस्ताव प्रायोजक बैठक में भाग लिया।

2.डॉ. ललन कुमार, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 20-25 मार्च 2016 के दौरान आईसीएएसएसपी 2016 के दौरान पोस्टर प्रस्तुत किया।

3.डॉ. प्रवास रंजन साहू, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-06 मार्च 2016 के दौरान भा.प्रौ.सं. गुवाहटी में "संचार पर राष्ट्रीय सम्मेलन 2016" में "परफार्मेंस ऑफ द मॉडिफाइड स्विच एंड एक्जामिन डाइवर्सिटी कम्बाइनर ओवर जनरलाइज्ड गामा फेडिंग चैनल्स एंड परफार्मेंस एनालाइसिस ऑफ डीसीएसके मॉड्युलेशन विथ डाइवर्सिटी नॉट रिक्वाइरिंग चैनल स्टेट इन्फार्मेशन" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

4.डॉ. सत्विदानंद रथ, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-06 मार्च 2016 के दौरान भा.प्रौ.सं. जोधपुर में आयोजित एनसीएसएमडी 2016 में " कॉपरेटिव एक्सिटॉनिक ट्रांजिशन एंड व्हाइट लाइट एमिज़न इन Au8-Cds हाइब्रिड्स नैनोरॉड्स" विषय पर मौखिक प्रस्तुति दी।

5. डॉ देबदत्ता स्वाईं, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान ने दिनांक 04-07 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली मे आयोजित एसपीआईई एशिया पेसेफिक रिमोट सेंसिंग कॉन्फरेंस में "इम्पैक्ट ऑफ रैपिड अर्बनाइजेशन ऑन द माइक्रोक्लाइमेट ऑफ इंडियन सिटिज़ एंड रिलेशन विटिबिन ट्रॉपिकल साइक्लॉन हीट पोटेंशियल एंड साइक्लॉन इंटेनसिटी इन द नार्थ इंडियन ओसेन" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

6. डॉ. श्रीनिवास रामानुजम कन्न, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-07 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली मे आयोजित एसपीआईई एशिया पेसेफिक रिमोट सेंसिंग कॉन्फरेंस में "इन्फार्मेशन थियोरिटिक एप्परॉच यूजिंग न्यूरल नेटवर्क फॉर डिटरमाइनिंग रेडियोमिटर ऑब्जर्वेशन फ्रॉम रेडर एंड वाइस वर्सा" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

7. डॉ. विनोज वेलू, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-07 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली मे आयोजित एसपीआईई एशिया पेसेफिक रिमोट सेंसिंग कॉन्फरेंस में "इम्पैक्ट ऑफ रैपिड अर्बनाइजेशन ऑन द माइक्रोक्लाइमेट ऑफ इंडियन सिटिज़ एंड रिलेशन बिटविन ट्रॉपिकल साइक्लोन हीट पोटेंनशियल एंड साइक्लॉन इंटेनसिटी इन द नार्थ इंडियन ओसेन" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

8. डॉ. संदीप पट्टनायक, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-07 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली मे आयोजित एसपीआईई एशिया पेसेफिक रिमोट सेंसिंग कॉन्फरेंस में "हाई रिजोल्यूशन लैंड सर्फेस रिसपांड ऑफ इनलैंड मूविंग इंडियन मानसून डिप्रेसन ओवर बे ऑफ बैंगाल" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

9.डॉ. चंद्रशेखर भामिदीपति, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ एवं अध्यक्ष (गेट-जैम) ने भा.प्रौ.सं. मद्रास में आयोजित जैम 2016 बैठक में भाग लिया।

10. डॉ. राज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 28-30 अप्रैल 2016 के दौरान एनआईओ गोवा में आयोजित क्वेटरनरी क्लाइमेट : रिसेंट फाइन्डिंग्स एंड फ्युचर चैलेंजेस के एक सत्र के समन्वयक रहे और "एसेसिंग डिप वाटर मास वेरिएबिलिटी इन ईसीएस यूजिंग पॉपुलेशन अबेंडेस एंड Mg/Ca रेसिय ऑफ बेंथिक फोरामिनिफेरा" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

भा.प्रौ.सं. के नियोजन प्रकोष्ठ के अध्यक्षों की बैठक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर की भविष्य विकास प्रकोष्ठ ने अखिल भा.प्रौ.सं. के नियोजन प्रकोष्ठ के अध्यक्षों के लिए दिनांक 01 अप्रैल 2016 को एक बैठक का आयोजन किया। विभिन्न भा.प्रौ.सं. के नियोजन प्रकोष्ठ के अध्यक्षों द्वारा एक फोरम का गठन किया गया जिसका नाम अखिल भा.प्रौ.सं. नियोजन समिति (एआईपीसी) रखा गया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार ने अपने संबोधन में संस्थान परिसर में बड़े पैमाने में परिसर नियोजन के लिए मूल उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि ऐसा करने से भा.प्रौ.संस्थानों द्वारा तैयार किए जा रहे है मानव संसाधनों की सही मायने में उपयोगिता सिद्ध हो सकेगी।

एआईपीसी सदस्यों ने सामान्य समस्याएँ एवं संभव समाधान, भा.प्रौ.सं. का आपसी समन्वयन, नियोजन के सुधार हेतु सुझाव इत्यादि विषयों पर चर्चा की। एआईपीसी एक ऐसा सामान्य मंच है जो छात्र समुदाय एवं उद्योगों के बीच परस्पर

संबंध स्थापित करने का अच्छा माध्यम है। बैठक के दौरान सामान्य पूर्व-मूल्यांकन परीक्षा, परिसर का दौरा करने हेतु सार्वजनिक इकाईयों को प्रोत्साहित करना, कंपनी से संबंधित छात्रों की समस्या आदि विषयों पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, एआईपीसी सदस्यों ने भविष्य में नियोजन कार्य की वृद्धि के लिए योजना तैयार की।

डॉ. सी. एन. भेंडे, प्राध्यापक प्रभारी, भविष्य विकास प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर कार्यक्रम के समन्वयक थे।

सांस्कृतिक सप्ताह 2016

सांस्कृतिक सप्ताह 2016 का आयोजन संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का आरंभ पंडित देवाशीष भट्टाचार्य एवं पंडित चंद्रशेखर गांधी के विस्मयकारी प्रदर्शन से हुआ जिन्होंने सरोद और तबला के प्रदर्शन से उपस्थित जनसमूहों को मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम का आयोजन स्पीक मकै (युवाओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के प्रति प्रोत्सान नामक संस्था) भुवनेश्वर केंद्र के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने कार्यक्रम के आयोजन की सराहना की। तत्पश्चात संस्थान की साहित्यिक सोसायटी "अभिव्यक्ति" के माध्यम से "क्या जन प्रतिनिधियों के शिक्षा अर्हता अनिवार्य होनी चाहिए" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के अनेक छात्र-छात्रों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के दूसरे दिन संस्थान की अंग्रेजी साहित्यिक सोसायटी के तत्वावधान से "ग्रेम ऑफ थ्रॉन" नामक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही " रिडिंग ए पैराग्राफी बैकवर्ड्स" एक आकर्षक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। तत्पश्चात संस्थान छात्रों के लिए संगीत प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम जैसे एकल गायन, इंस्ट्रुमेंटल एवं कवर म्यूज़िक जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम के अंतिम दिन नृत्य के लिए समर्पित था जिसमें संस्थान की नृत्य सोसायटी के सदस्यों के अलावा संस्थान के विभिन्न छात्रों ने एकल एवं समूह के रूप में नृत्य प्रदर्शन कर उपस्थित जनसमूहों से सराहना प्राप्त की। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण के साथ हुआ जिसमें डॉ. एन.वी.एल.एन मूर्ति एवं डॉ. श्रीनिवास करंकी ने विजयी प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण किया और उनके द्वारा किए निष्पादन के लिए सराहना की और भविष्य में इसी तरह के आयोजन पर बल दिया। वहीं डॉ. करंकी ने अपने संबोधन में इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन के माध्यम से छात्रों की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने पर जोर दिया।

उपलब्धियाँ

संस्थान छात्र को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पपेर पुरस्कार

संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ के द्वितीय वर्ष के विज्ञान निष्णात के छात्र श्री पुरुषोत्तम दास वैरागी को डॉ. आर.आर. दाश की पर्येवक्षण में दिनांक 01-02 अप्रैल 2016 को भा.प्रौ.सं. गुवाहटी में आयोजित अपशिष्ट प्रबंधन पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में उनके पेपर "इफैक्टिव स्टडी ऑफ डोलोचर एस ए फिल्टर मीडिया इन स्लो सैंड फिल्टरेशन" को सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आईईईई वरिष्ठ सदस्यों के इलिट रैंक में डॉ. देबलीना घोष

डॉ. देबलीना घोष, संकाय सदस्य, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ को वर्ष (2016) में आईईईई के वरिष्ठ सदस्य में शामिल किया गया। यह सदस्यता आईईईई के व्यावसायिक ग्रेड की सबसे उच्चतम सदस्यता मानी जाती है जिसे अनुभव एवं व्यावसायिक योग्यता एवं वयस्कता के आधार पर दिया जाता है।

नई नियुक्तियाँ

1. सुश्री स्वर्णलता स्वाई ने दिनांक 21.03.2016 को संस्थान में 'स्टाफ नर्स'(महिला) (संविदा पर) पद पर कार्यग्रहण किया और उन्हें चिकित्सा इकाई में पदस्थापित किया गया।
2. डॉ. रेमया नीलनचेरी ने दिनांक 04.04.2015 को संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) पद पर कार्यग्रहण किया।
3. डॉ. दिनकर पासला ने दिनाक 18.04.2016 को संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया ।
4. डॉ. सुमंत हलदर ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया ।
5. डॉ. निरोद चंद्र साहू ने दिनांक 18.04.2016 को संस्थान के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
6. डॉ. प्रशांत कुमार साहू ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
7. डॉ. चंद्रशेखर नारायण भेंडे ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
8. डॉ. सुभ्रांशु रंजन सामंतराय ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
9. डॉ. अरूण कुमार प्रधान ने दिनांक 18.04.2016 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
10. डॉ. मिहिर कुमार पंडित ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
11. डॉ. सत्यनारायण पाणिग्राही ने दिनांक 18.04.2014 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

अरगुल परिसर में उन्नत भारत अभियान जागरूकता कार्यक्रम

संस्थान की यूबीए टीम ने दिनांक 14.04.2016 को संस्थान के समीप अंगीकृत किए गए गाँवों के प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए उन्नत भारत अभियान जागरूक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में स्थानीय स्कूली छात्रों के अतिरिक्त अनेक प्राध्यापकों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए प्रो. आर.के. पंडा, यूबीए, समन्वयक ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और वहनीय प्रौद्योगिकी के प्रयोग के माध्यम से अंगीकृत किए गए गाँवों के सर्वांगीण विकास हेतु यूबीए अभियान की विशिष्टता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने संबोधन में स्वच्छता, सौर ऊर्जा, शिक्षण एवं पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम की रूपरेखा को रेखांकित किया। कार्यक्रम में संस्थान के नौ संकाय सदस्यों के साथ अनेक छात्रों ने भाग लिया।

छात्रों के साथ संकाय सदस्यों ने स्वच्छता, साफ-सफाई, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरणीय सुरक्षा एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भविष्य विकास पर अंतरक्रिया सत्र, शैक्षिक वीडियो, औपचारिक खेल और प्रश्न-उत्तर के माध्यम से

जागरूकता प्रदान की। चित्रकारी प्रतियोगिता एवं अंक खेल के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शकों के बीच पुरस्कार वितरित किए गए। इसके साथ ही प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। स्कूली छात्रों ने इस दौरान आयोजित संपूर्ण प्रतियोगिता में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। यूबीए की टीम ने उपस्थित छात्रों को आगामी छात्रों को कार्यात्मक अंग्रेजी पर प्रशिक्षण सत्र की भी जानकारी दी।

इस दौरान संस्थान छात्रों ने "सॉल्स फॉर सोलेस टीम" द्वारा दिनांक 03 अक्तूबर 2015 को संस्थान के अंगीकृत गाँवों में स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता अभियान के आयोजन संबंधी जानकारी भी प्रदान की गई।

नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का लोकार्पण, एक दिवसीय कार्यशाला एवं प्रतियोगिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर द्वारा आयोजित **"राजभाषा नीति का कार्यान्वयन : समस्याएं एवं समाधान"** पर दिनांक 26.04.2016 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के संस्थान प्रेक्षागृह में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता, प्रो. आर. वी. राज कुमार, अध्यक्ष नराकास ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. पंडा, उप महा निदेशक राष्ट्रीय सूचना केंद्र एवं सम्मानीय अतिथि के रूप में डॉ. आर.एन. बेहेरा, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय परंपरानुसार दीप प्रज्जवलन से हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव, नराकास, भुवनेश्वर (के.) ने कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों से लगभग 75 प्रतिभागी उपस्थित थे।

प्रो.आर.वी. राज कुमार, अध्यक्ष, नराकास ने अपने संबोधन में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की वृद्धि में प्रौद्योगिकी के विकास पर बल दिया और कहा कि इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट का निर्माण एनआईसी के सहयोग से किया गया है। उन्होंने इस कार्य के लिए एनआईसी टीम का आभार व्यक्त किया।

नराकास भुवनेश्वर की वेबसाइट www.tolicbbs.nic.in का लोकार्पण अध्यक्ष नराकास, मुख्य अतिथि एवं सम्मानीय अतिथि द्वारा किया गया। सदस्य-सचिव श्री जैन ने वेबसाइट की सामग्रियों और इसमें दिए गए पंजीकरण पैनल संबंधी जानकारी सांझा की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री पंडा ने इस महत्वपूर्ण योजना को क्रियान्वित करने के लिए भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर एवं अपनी एनआईसी की टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने अपने संबोधन में इस वेबसाइट को राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

सम्मानीय अतिथि डॉ. आर. एन. बेहेरा ने वेबसाइट के निर्माण के दौरान आई समस्याओं के बारे में बोलते हुए कहा कि हिंदी में वेबासाइट का निर्माण अत्यंत चुनौतिपूर्ण था लेकिन हमारी टीम की संकलपबद्धता ने इस कार्य को करने में सफलता दिलाई। मैं अध्यक्ष नराकास को इस योजना के लिए बधाई देता हूँ जिनके मार्गदर्शन में इस वेबसाइट का निर्माण हो सका है। उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों को इस वेबसाइट की सामग्री को निरंतर रूप से अद्यतीत करने के लिए भी अनुरोध किया।

डॉ. राज कुमार सिंह ने अपने संबोधन में इस वेबसाइट के निर्माण की सार्थकता पर प्रकाश डाला और इसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए सभी सदस्य कार्यालयों से निरंतर सामग्रियों के प्रेषण की अपेक्षा की। श्री आर.एन.चांद ने राजभाषा नीति का परिचय, श्री हरिराम पंसारी, सदस्य-सचिव, नराकास भुवनेश्वर (उपक्रम) एवं प्रबंधक नालको ने हिंदी के संसाधित उपकरण एवं यूनिकोड एक परिचय, श्री नितिन जैन, सदस्य-सचिव नराकास ने ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने तथा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए सुझाव संबंधी अपने अनुभवों को पॉवर प्वाइंट के माध्यम से सांझा किया। तदोपरांत सभी सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में श्री राम किशोर शर्मा, पुनर्वास अधिकारी, व्यवसायिक विकलांग अनुसंधान केंद्र तथा श्री विजय कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन उपस्थित थे। प्रतियोगिता में कुल 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री निहार रंजन पंडा, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर, द्वितीय पुरस्कार , श्री दिलीप कु. दास, खादी और ग्रामोद्योग एवं तृतीय पुरस्कार श्री अभिषेक कुमार को प्राप्त हुआ। इसके साथ ही दो सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।

साहित्य मंच

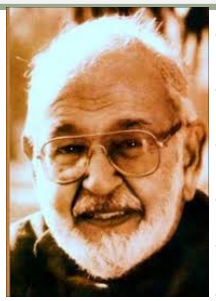

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" (7 मार्च, 1911- 4 अप्रैल, 1987) को प्रतिभासम्पन्न कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और सफल अध्यापक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कुशीनगर नामक ऐतिहासिक स्थान में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। बी.एस.सी. करके अंग्रेजी में एम.ए. करते समय क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकडे गये और वहाँ से फरार भी हो गए । सन्1930 ई. के अन्त में पकड़ लिये गये। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनुवादन किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ-साथ वे एक अच्छे फोटोग्राफर और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा पिता की देख रेख में घर पर हई। उनकी शिक्षा संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा व साहित्य के अध्ययन के साथ हुई। 1925 में पंजाब से एंट्रेंस की परीक्षा पास की और उसके बाद मद्रास क्रिस्चन कॉलेज में दाखिल हुए। वहाँ से विज्ञान में इंटर की पढ़ाई पूरी कर 1927 में वे बी.एससी. करने के लिए लाहौर के फॅरमन कॉलेज के छात्र बने। 1929 में बी. एससी. करने के बाद एम.ए. में उन्होंने अंग्रेजी विषय लिया; पर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी। 1930 से 1936 तक का समयकाल विभिन्न जेलों में कटा। 1936-1937 में सैनिक और विशाल भारत नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। 1943 से 1946 तक ब्रिटिश सेना में रहे; इसके बाद इलाहाबाद से प्रतीक नामक पत्रिका निकाली और ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी स्वीकार की। देश-विदेश की यात्राएं की। जिसमें उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक में अध्यापन का काम किया और दिल्ली लौटे और फिर दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाइम्स, अंग्रेजी पत्रिका वाक् और एवरीमैंस जैसी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। सन् 1980 में

उन्होंने वत्सलनिधि नामक एक न्यास की स्थापना की जिसका उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करना था। दिल्ली में ही 4 अप्रैल 1987 को उनकी मृत्यु हुई। सन् 1964 में "आँगन के पार द्वार" के लिए उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और 1978 में "कितनी नावों में कितनी बार" के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी 105 वीं जन्म जयंती पर प्रस्तत है उनके काव्य संग्रह "हरी घास पर" की एक प्रसिद्ध रचना "नदी के द्वीप" -

नदी के द्वीप

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत-कूल
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

माँ है वह! है, इसी से हम बने हैं।
किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।
किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनाएँगे।

द्वीप हैं हम! यह नहीं है शाप। यह अपनी नियती है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में।
वह बृहत भूखंड से हम को मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।
नदी तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, सस्कार देती चलो। यदि ऐसा कभी हो -

तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के,
किसी स्वैराचार से, अतिचार से,
तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे -
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल,
प्रावाहिनी बन जाए -
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर।
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नए व्यक्तित्व का आकार।
मात:, उसे फिर संस्कार तुम देना।

मार्गदर्शक : डॉ. राज कुमार सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)
सलाहकार : डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस एवं डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस
संपादक : श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक